राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, आजमगढ़, उ.प्र.

TEQIP-3

तकनीकी शिक्षा गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम

द्वारा प्रायोजित

गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग ,कराड ,महाराष्ट्र

के सहयोग से

अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस

15अक्टूबर ,2018

राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज , आजमगढ़, उ.प्र.

मुख्य संरक्षक

प्रोफेसर विनय कुमार पाठक

संरक्षक

प्रोफेसर. एस. पी. पांडेय

संयोजक

डॉ. राजेश सिंह

आयोजन सचिव

सुश्री. स्तुति मौर्या

आयोजन समिति

सुश्री शिक्षा सिंह
सुश्री शालू मल्ल
सुश्री राधा
सुश्री नुतन
सुश्री ईशा वर्मा
सुश्री जागृति मिश्रा
सुश्री अंजली

राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, आजमगढ़

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कौशल मापदंडो से कदम मिलाकर चलने वाले उच्च श्रेणी के अभियंताओं का निर्माण करने के लिए भी जिम्मेदार है। साथ ही साथ यह तमाम पड़ोसी औद्योगिक संस्थाओ को सलाहकारी सेवाएं प्रदान करता है। यह संस्थान डॉ. ऐ. पी. जे. अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से मान्यता प्राप्त है जो की ऐ. आई. सी. टी. ई. नई दिल्ली द्वारा भी मान्यता प्राप्त है। यह संस्थान जानपदीय अभियंत्रण ,सूचना प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिक अभियंत्रण से सम्बंधित पाठ्यक्रमों में स्नातक का अध्ययन प्रदान करता है। यह संस्थान उपयुक्त अभ्यासों के अलावा मानविकी में पी. एच. डी. की डिग्री भी प्रदान करता है। राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज आजमगढ़ ने मानव सन्साधन विकास मन्त्रालय, और तकनीकी शिक्षा गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम परियोजना के लिए विश्व बैंक के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये है।

समस्त विभाग अपने विद्यार्थियों को सही दिशा देने के लिए उनके तमाम शोध योजनाओ में उनके साथ पूर्ण रूप से लिप्त है। साथ ही साथ यहां के शिक्षकगणो का प्रयास है की दुनिया के तमाम विख्यात अग्रगामी विश्वविद्यालयों / प्रयोगशालाओं / संस्थाओ से सहयोग का सम्बन्ध स्थापित किया जाए। इस संस्थान की खूबसूरती यहां के विभाग एवं प्रयोगशालाओं से झलकती है जो की बेहद ही आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है।

अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस : १५ अक्टूबर

पिछले कुछ सहस्त्राब्दी में भारत में महिलाओ की स्थिति में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए है। प्राचीन से मध्यकालीन काल तक उनकी स्थिति में गिरावट के साथ, कई सुधारको द्वारा समान अधिकारों के प्रचार के लिए उनका इतिहास शानदार रहा है। आधुनिक भारत में, महिलाओ ने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, विपक्ष नेता, केंद्रीय मंत्रियो ,मुख्यमंत्रियों और गवर्नरों सहित उच्च कार्यालयों को सुशोभित किया है।

अनंतकाल से महिलाओ ने पुरुषो की तुलना में एक महत्वपूर्ण पदो को सुशोभित किया है और यह कोई असाधारण नहीं है। दुनिया इतनी प्यारी आराध्य और रहने योग्य जगह नहीं थी,बिना महिलाओ के निःस्वार्थ रूप से किये गए अद्भुत योगदान के बिना। महिलाये हमेशा एक पत्नी, माँ, बहन होने की जिम्मेदारी निभाती है और हमे समझने कि जरुरत नहीं है कि उन्होंने इसे कितने शानदार तरीके से निभाया है।

पुरुष और महिलाये एक दूसरे कि पूरक है अगर पुरुषो को बाहरी मामलो को सभालना था तो महिलाये भी आंतरिक मामलो के लिए अधिक जिम्मेदार थी। आज महिलाये आवरणों और बाहरी दुनिया के मामलो में सामान रूप से सक्षम है और वे अधिक आत्मविश्वास रखती है और एक उन्हें ही जीवन के हर संभव क्षेत्र में पाया जा सकता है। भारत में ग्रामीण महिला कि अपेक्षा शहरी महिलाओ के लिए अच्छी शिक्षा, आय के श्रोत और जरुरी समानो कि आसानी से उपलब्धता थी। इन् सबके बावजूद भी ग्रामीण महिलाओ ने मूलभूत सुविधाओं के अभाव में भी बहुत ही तेज़ी के साथ अपनी स्थिति में सुधार किया है पर इसका मतलब ये बिलकुल नहीं है कि हमने पूरी तरीके से महिला सशक्तिकरण को प्राप्त कर लिया है, हां हम ये जरूर कह सकते है कि धीरे-धीरे सुधार के संकेत दिखाई दे रहे है।

प्राचीनकाल में महिलाये तीक्ष्ण शक्तिओ को तो नियंत्रित करती ही थी साथ ही साथ समाज में अपने ख़ास महत्व के लिए भी जानी जाती थी।इस बात का उदाहरण हमे धर्मग्रंथो के अलावा पौराणिक कथाओ में भी देखने को भी मिलता है। हम माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी, माँ शारदा एवं कई देवियो को पूजते है जो की ये दर्शाता है कैसे भारतीय सभ्यता ने महिलाओ के रूप का आदर किया है।

परन्तु पिछले कुछ दशकों और शताब्दियों में चीज़े बदली है समाज की संरचना एक नई दिशा की ओर बढ़ी है महिलाये लगातार अपने शक्तिशाली होने का परिमाण देती आयी है। वे यह दिखाती आयी है कि वे भी पुरुषो से कम नहीं है। जैसा कि पिछले कई ओलम्पिक खेलो में उन्होंने पुरुषो कि अपेक्षा कही ज्यादा अच्छा प्रदर्शन किया है। यह सब सरकार द्वारा जारी निरंतर प्रयासों ,विभिन्न सामाजिक संस्थाओ एवं समाज के कल्याण के लिए काम कर रहे कई संघो की बदौलत महिलाओ की स्तिथि में प्रबल सुधार देखने को मिल रहा है।कई अन्य गैर सरकारी संगठन भी सामने आये है, जिन्होंने महिलाओ की आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने में अपनी रूचि दिखाई है और इन् सब का परिणाम वास्तव में उत्साहवर्धक साबित हो रहा है।

मुख्य वक्ता

श्रीमती नीलम सोनकर (लोकसभा सांसद, लालगंज, आजमगढ़, उ.प्र.)

डॉ. मनोज नरदेवसिंह (सहायक महासचिव, एशियाई अफ्रीकी ग्रामीण विकास संगठन)

श्रीमती रिचा पाण्डेय (अधिवक्ता,सुप्रीम कोर्ट,नई दिल्ली)

सुश्री प्रियंका प्रियदर्शी (उपजिलाधिकारी, लालगंज, आजमगढ़, उ.प्र)

श्रीमती शीला मिश्रा (प्राचार्य, श्री कृष्ण गीता राष्ट्रीय महाविद्यालय, लालगंज